

युद्ध कला

“सभी के लिए समान रूप से उपयोगी क्योंकि मुहब्बत,
जंग और व्यापार में सब कुछ जायज़ है”

युद्ध का असल मकसद है शांति

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in or introduced into a retrieval system, or transmitted, in any form, or by any means (electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise) without the prior written permission of QFORD. Any person who does any unauthorized act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.

ISBN: 978-93-80494-16-6

Copyright © QFORD EDUCARE

Published by:

QFORD

New Delhi (India)

Ph.: +91-9911119055/4055

Fax: +91-11-43115444

Email: info@QFORD.co.in

info@qfordconcepts.com

Website: <http://www.QFORD.org>

<http://www.QFORD.asia>

The Art of War

by Sun Tzu

Hindi Translation: Pratap Singh Chundawat

युद्ध कला

अंतर्राष्ट्रीय बेस्ट-सेलर
द आर्ट ऑफ वॉर का हिंदी अनुवाद

लेखक

संजू

अनुवाद : प्रताप सिंह चुण्डावत
शब्दांकन एवं संपादन : आशा प्रूथी एवं सरिता जिन्दल



क्यूफोर्ड, भारत द्वारा प्रकाशित

आलोचनाएँ

सैनिकों के लिए अभी तक लिखे गए साहित्य में “आर्ट ऑफ वॉर” सर्वश्रेष्ठ पुस्तक है। संजू द्वारा बताए गए युद्ध के तौर तरीके आज भी उतने ही कारगर हैं जितने कि ढाई हजार साल पहले हुआ करते थे। आपको यह पुस्तक अवश्य ही पढ़नी चाहिए।

- जनरल ए.एम. ग्रे, जल सेनाध्यक्ष

चीनियों की युद्ध कला पर स्पष्ट रूप से प्रकाश डालने वाली यह पुस्तक वास्तव में प्रासंगिक है।

- द टाइम्स (लंदन)

पश्चिमवासियों के लिए युद्ध कला के विषय में जानने के लिए दर्जनों पुस्तकें उपलब्ध हैं, परन्तु जापानी लोग (खासकर उद्योगपति) इस विषय पर जानकारी प्राप्त करने के लिए “आर्ट ऑफ वॉर” का अध्ययन करते हैं, विशेष तौर पर तब जब वे किसी जटिल समस्या का समाधान ढूँढ रहे हों।

- बोर्डरूम रपट

यह पुस्तक चीनियों द्वारा सदियों से अपनाई जा रही युद्ध तकनीकों का अनूठा संग्रह है।

- लॉस एंजिल्स हेराल्ड एग्जामिनर

चुनौतियों से पार पाना सिखाती है - आर्ट ऑफ वॉर।

- बोर्डरूम रपट

सैमुअल ग्रिफ्थ जैसे विद्वानों ने इस पुस्तक को आधुनिक पाठकों के लिए उपयोगी बना दिया है।

- फिलाडेल्फिया एंक्वायरर



सं जू

सं जू एक चीनी व्यक्ति था, जिसे दुनिया युद्ध कौशल पर उसके द्वारा लिखित पुस्तक “आर्ट ऑफ वॉर” के लेखक के रूप में जानती है। युद्ध कला को संपूर्ण विश्व के सम्मुख विस्तारपूर्वक रखने वाले वे पहले यथार्थवादी लेखक हैं। इन्हें चेंग किंग के नाम से भी जाना जाता है।

परिचय

सं जू, ची प्रांत का रहने वाला था। वू प्रांत के राजा हो लू ने जब उसकी इस पुस्तक को पढ़ा तो उसने सं जू को बुलवा भेजा। उसने सं जू से पूछा कि जिन युद्ध कलाओं का वर्णन उसने अपनी पुस्तक में किया है क्या वे व्यवहारिक हैं।

सं जू ने हाँ में उत्तर दिया।

क्या वह यह सिद्ध करके दिखाएगा? राजा ने पूछा।

सं जू ने हाँ में उत्तर दिया।

हो लू ने सवाल किया - क्या यह प्रयोग महिलाओं पर किया जा सकता है?

इस बार भी सं जू का जवाब हाँ था।

महल से 180 महिलाएं बुलाई गईं। सं जू ने उन्हें दो टुकड़ियों (कम्पनियों) में बांट दिया तथा राजा की विश्वसनीय एवं चहेती महिलाओं को उन कम्पनियों का कमांडर बना दिया। सभी के हाथों में एक-एक भाला दे दिया गया। सं जू ने उन सभी को संबोधित किया, “मैं समझता हूँ कि आप सभी आगे, पीछे, दाएं तथा बाएं में फर्क समझते हैं।”

महिलाओं का जवाब था - हाँ।

सं जू ने आगे कहा - जब मैं कहूँ “सामने देख” तो आप सभी सामने देखेंगे। जब मैं कहूँ “बाएं मुड़” तो आप सभी बाएं हाथ की तरफ मुड़ेंगे। जब मैं कहूँ “दाएं मुड़” तो आप सभी दाएं मुड़ेंगे और जब मैं कहूँ “पीछे मुड़” तो आप पीछे मुड़कर खड़े हो जाएंगे।

मेरा कहा आप सभी की समझ में आ गया - सं जू ने पूछा।

सभी महिलाओं ने कहा - हाँ।

तब सं जू ने हुक्म दिया - दाएं मुड़।

इस पर सभी महिलाएं हंस दीं।

सं जू ने धैर्यपूर्वक कहा - यदि कमांडर द्वारा दिया गया आदेश निश्चित एवं स्पष्ट रूप से सुनाई देने वाला नहीं था, तथा आदेश को अच्छी तरह से समझा नहीं गया है, तो इसके लिए कमांडर दोषी है।

उसने फिर से उन्हें बताया कि क्या-क्या और कैसे-कैसे करना है। इस बार सं जू ने उन्हें आदेश दिया - बाएं मुड़।

इस पर महिलाएं फिर से हंस पड़ीं।

सं जू ने पुनः कहा - दिया गया आदेश यदि निश्चित एवं स्पष्ट सुनाई देने वाला नहीं था, और यदि आदेश को अच्छी तरह से समझा नहीं गया है, तो इसके लिए कमांडर दोषी है। परंतु आदेश के निश्चित एवं स्पष्ट होने के बावजूद यदि सिपाही उसका पालन न करें तो यह उनके अफसरों की गलती है। इतना कहने के बाद उसने उन दोनों कम्पनी कमांडरों के सिर कलम करने का हुक्म दे डाला।

राजा ने जब यह देखा तो उसने ऐसा न किए जाने की वकालत की। इस पर सं जू ने जवाब दिया कि वह सेनापति है और उसने उन दोनों महिला कमांडरों के सिर कलम करवा दिए हैं, तथा वरीयता क्रम में दो अन्य महिलाओं को उनकी जगह नियुक्त कर दिया है। इसके बाद कवायद शुरू हुई। दाएं मुड़, बाएं मुड़, पीछे मुड़, घुटने के बल बैठना आदि-आदि, तथा सभी कुछ एक साथ आदेशानुसार किया जाने लगा।

दो दशकों तक सं जू ने राज्य विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सन् 1782 में फादर अमिओट ने इस पुस्तक का फ्रांसिसी भाषा में अनुवाद किया। पी.एफ. केलथ्रोप ने पहली बार तथा लियोनेल गिल्स ने दूसरी बार इसी पुस्तक का अंग्रेजी में अनुवाद किया।

दो शब्द

बचपन में युद्ध की अनेक कहानियाँ सुनीं। चित्तौड़ एवं मेवाड़ की युद्ध भूमियों पर हुए संग्रामों के व्याख्यान सुने। चारण, भाट, दमामियों से वीरता के दोहे सुने। वीर रस पढ़ा। युद्धों से बने रीति-रिवाजों में पला बढ़ा। किंतु आंतरिक सुरक्षा अकादमी केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल माउंट आबू में मेरे साथ प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे श्री विशंभर सिंह के आतंकवादियों को मारते समय शहीद होने पर किताबों की दुनिया से बाहर निकल कर जमीन पर आ गया।

पहली बार संजू द्वारा लिखित यह पुस्तक पढ़ी, तो यह अहसास हुआ कि काश इस कला की जानकारी मेवाड़ को भी होती।

वर्ष 1992 में मैंने पहली बार इस पुस्तक का हिंदी में अनुवाद किया। हजारों बार इस पुस्तक को पढ़ा।

संजू के चरित्र को असली जीवन में जीने का प्रयास किया। झारखण्ड में निर्भीक सेनानायक बनकर मोर्चा संभाला। महिला सिपाहियों को भी संजू के बताए नियमों के अनुसार कमांड किया। मेरे पुत्र एवं सहयोगियों के अनुसार मैं कोई भी कठिन कार्य बड़ी ही सरलता के साथ पूरा कर लेता हूँ।

आज लगभग ढाई हजार वर्ष बाद भी युद्ध कला विषय पर लिखी गई यह सबसे अच्छी पुस्तक है।

– प्रताप सिंह चुण्डावत
artofwar@outlook.in



1. योजनाएँ तैयार करना

सजू के अनुसार - युद्ध कौशल किसी भी राष्ट्र की सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह जीवन और मृत्यु का प्रश्न है क्योंकि या तो यह सुरक्षा प्रदान करता है या फिर विनाश की ओर ले जाता है इसलिए किसी भी कीमत पर इसे अनदेखा नहीं किया जा सकता।

युद्ध कला पांच स्थाई तत्त्वों पर आधारित होती है, तथा युद्ध कला की अवस्थाओं को निर्धारित करने के लिए इन पांच तत्त्वों को ध्यान में रखा जाना अति आवश्यक है। ये तत्त्व हैं - नैतिक नियम, प्रकृति, पृथ्वी, सेनापति तथा प्रणाली एवं अनुशासन।

नैतिक नियम : ये नियम शासक तथा जनता के बीच तालमेल बनाए रखने के लिए जरूरी होते हैं। इनके चलते प्रजा निर्भय होकर राजा पर विश्वास करते हुए उसके आदेशों का पालन करती है।

प्रकृति : यह रात-दिन, सर्दी-गर्मी, काल एवं ऋतुओं को इंगित करता है।

पृथ्वी : इसमें छोटी और बड़ी दूरियाँ, खतरे एवं सुरक्षा, खुले मैदान तथा संकरे रास्ते, जीवन एवं मृत्यु के अवसर शामिल हैं।

सेनाध्यक्ष : एक अच्छे कमांडर में विवेकपूर्ण निर्णय लेने की क्षमता, ईमानदारी, करुणा एवं साहस जैसे गुणों के साथ-साथ नियम एवं कानूनों की कठोरता से पालन करने की क्षमता भी होनी चाहिए।

प्रणाली एवं अनुशासन : प्रणाली एवं अनुशासन का अर्थ है - सेना को उचित टुकड़ियों में बांटकर संगठित करना, सक्षम अधिकारियों को उनकी योग्यता के आधार पर उचित पदों पर नियुक्त करना, रास्तों को उत्तम अवस्था में बनाए रखना ताकि सेना के लिए जरूरी सामग्री

आसानी से आ जा सके तथा सेना के खर्च पर नियंत्रण रखना।

सेना के प्रत्येक जनरल को इन पांच तत्वों की जानकारी होनी जरूरी है। जो इनसे परिचित है वह विजयी होगा तथा कभी पराजित नहीं होगा।

सैन्य अवस्थाओं का मूल्यांकन अथवा परख करते समय निम्न तथ्यों को अपने तुलनात्मक अध्ययन का आधार बनाया जाना चाहिए -

- (1) दोनों राष्ट्रों में से कौन सा राष्ट्र नैतिक नियमों से प्रेरित है?
- (2) दोनों राष्ट्रों में से कौन से राष्ट्र का सेनाध्यक्ष अधिक योग्य है?
- (3) कौन से राष्ट्र को प्रकृति एवं पृथ्वी के लाभ अधिक प्राप्त हैं?
- (4) किस राष्ट्र की सेना में अनुशासन का कठोरता पूर्वक पालन किया जाता है?

तू मू, साओ साओ (155-220 ई.) की एक प्रशंसनीय कथा का जिक्र करता है। साओ-साओ इतना अधिक कठोर एवं अनुशासन प्रिय था कि एक बार खड़ी फसलों की रक्षा के लिए बनाए हुए उसके कठोर नियमों के चलते उसने स्वयं को ही मृत्यु की सजा सुना दी, क्योंकि उसने अपने घोड़े को अनाज के एक खेत में खड़े होने दिया था। परंतु उसके अनुयायियों ने न्याय प्रक्रिया को क्षतिग्रस्त होने से बचाने के लिए, समझा-बुझाकर उसे ऐसा न करने के लिए राजी कर लिया।

अतः जब आप कानून बनाते हैं तो इस बात को सुनिश्चित करें कि उसकी अवमानना न हो और अगर कोई ऐसा करता है तो उसे मृत्यु दण्ड दिया जाना चाहिए।

- (5) दोनों देशों में से किसकी सेना अधिक शक्तिशाली है?
- (6) कौन सी सेना के अधिकारी एवं सैनिक अधिक प्रशिक्षित हैं?

क्योंकि निरंतर अभ्यास के अभाव में सैनिक युद्ध के नाम से भयभीत होंगे तथा आवश्यक प्रशिक्षण के अभाव में सेनाधि

कारी आपातकाल में अनिश्चय एवं दुविधा की स्थिति में होंगे।
परिणाम स्वरूप वे उचित निर्णय लेने में असमर्थ होंगे।

(7) किस देश की सेना में पुरस्कार एवं दण्ड देने के निर्णय का अधिक कठोरता के साथ पालन किया जाता है?

अर्थात् किस सेना में यह पूर्ण रूप से सुनिश्चित होता है कि कार्य कुशलता के आधार पर पदोन्नति होगी, तथा गलत कदम उठाने वालों को दंडित किया जाएगा।

उपरोक्त सात बातों के आधार पर मैं विजय अथवा पराजय की भविष्यवाणी कर सकता हूँ। जो सेनाध्यक्ष मेरे द्वारा बताए गए तरीकों पर अमल करेगा, विजयी होगा। ऐसे अधिकारी के हाथों में सेना का नियंत्रण दिया जाए, और जो ऐसा नहीं करेगा उसे पराजय का सामना करना पड़ेगा एवं उसे अविलम्ब निष्कासित किया जाए।

मेरे द्वारा बताए गए तरीकों का भरपूर फायदा उठाएं। इसके अतिरिक्त यदि किसी भी प्रकार का लाभ मिले तो उसे अवश्य लें तथा कार्य योजना में उसी के अनुसार संशोधन करें।

यहां संजू हमें वैचारिक सिद्धांतों पर अपना पूरा विश्वास जमाए रखने के लिए प्रेरित करता है क्योंकि चेंग यू के अनुसार - युद्ध के सभी नियम यद्यपि सभी के लाभ के लिए लिपिबद्ध किए जा सकते हैं, परंतु वास्तविक युद्ध में लाभ प्राप्त करने के प्रयास शत्रु के क्रियाकलापों के आधार पर बदले एवं निर्धारित किए जाने चाहिए।

वाटरलू के युद्ध की पूर्व संध्या पर लॉर्ड उक्सब्रिज (जो एक घुड़सवार सेना का कमांडर था) वेलिंगटन के शासक (ड्यूक) के पास उसकी अगले दिन की योजनाओं की जानकारी हासिल करने पहुँचा क्योंकि प्रधान सेनापति होने के नाते जानकारी के अभाव में आपातकालीन स्थिति में वह उचित योजनाएं तैयार करने में असमर्थ महसूस कर रहा था। ड्यूक ने उसकी बातों को शांतिपूर्वक सुना और पूछा - कल कौन पहले आक्रमण

करेगा - मैं या बोनापार्ट? उक्सब्रिज ने उत्तर दिया - बोनापार्ट।
इयूक का प्रत्युत्तर था - बोनापार्ट ने मुझे अपनी योजनाओं
के बारे में कुछ भी नहीं बताया है और क्योंकि मेरी योजनाएं
उसकी योजनाओं पर निर्भर होती हैं, अतः सही जानकारी के
अभाव में मैं तुम्हें कोई भी सलाह नहीं दे सकता।

संपूर्ण युद्ध प्रणाली छल पर आधारित है। अतः हमला करने पर लगना
चाहिए कि हम आक्रमण करने की स्थिति में नहीं हैं। जब हम अपनी
ताकतों का प्रयोग कर रहे हों तो स्वयं को निष्क्रिय दिखाएं। जब हम
निकट हों तो दुश्मन को लगना चाहिए कि हम उनसे बहुत दूर हैं और
जब दूर हों तो उन्हें लगना चाहिए कि हम उनके अत्यंत करीब हैं।

दुश्मन को फंसाने के लिए उसे प्रलोभन दें। दुश्मन के इलाके में
अफवाहों के द्वारा अव्यवस्था फैलाएं। यदि वह सभी मोर्चों पर मजबूत
है तो उसका सामना करने के लिए तैयार रहें। और यदि वह आपसे
अधिक ताकतवर है तो उसका सामना करने से बचें।

अत्यधिक सैनिक गुणों से परिपूर्ण होने की वजह से महान
माना जाने वाला वेलिंगटन अपनी छल प्रणाली के चलते अपने
मित्र एवं शत्रु दोनों को ठग लेता था।

यदि दुश्मन गुस्सेवाला है तो परेशान करके उसे तंग करें। उसके
सामने स्वयं को दुर्बल जाहिर करें ताकि वह घमण्डी बन जाए।

रण कौशल में निपुण व्यक्ति अपने दुश्मन के साथ ऐसे
खेल खेलता है जैसे बिल्ली चूहे के साथ खेलती है। पहले वह
कमजोर बनने का नाटक करते हुए दुबक कर बैठ जाती है और
समय आने पर अचानक आक्रमण कर देती है।

यदि दुश्मन आराम से बैठा हो तो उसे आराम न करने दें। यदि
उसकी सेना में एकजुटता है तो उसमें फूट डालें।

शत्रु पर वहां आक्रमण करें जहां वह तैयार न हो तथा वहां प्रकट
हो जाएं जहां आपके होने की कोई अपेक्षा न हो। युद्ध के इन मूलमंत्रों
(जो विजय प्राप्ति में सहायक होते हैं) को गुप्त रखना चाहिए। इनका

भेद खुलने पर आप मुसीबत में पड़ सकते हैं।

जीतने वाला सेनापति युद्ध प्रारंभ होने से पूर्व अनेक प्रकार की गणना करता है। हारने वाला सेनाध्यक्ष भी अनुमान लगाता है परंतु जीतने वाले की तुलना में कम। युद्ध जीतने के लिए विजय एवं पराजय दोनों विषयों पर अवलोकन करना जरूरी होता है। तथा इसी आधार पर मैं यह भविष्यवाणी कर सकता हूँ कि कौन जीतेगा और कौन नहीं।



2. युद्ध की तैयारी

युद्ध से पहले हमें उसकी लागत का पता लगा लेना चाहिए। संजू के अनुसार - युद्ध संचालन में जहां द्रुत गति से दौड़ने वाले एक हजार रथ हों, सुरक्षा कवच पहने हुए एक लाख सैनिक हों, जिनके पास एक हजार कोस चलने तक की रसद हो, साथ ही छावनी तथा सरहद पर खर्च करने के लिए पर्याप्त धन हो, जिसके द्वारा आने-जाने वाले अतिथियों की आव-भगत भी हो सके, छोटी-छोटी आवश्यक वस्तुएं जैसे गोंद, रंग-रोगन तथा रथों एवं सुरक्षा कवचों पर किया जाने वाला खर्च सब मिलाकर प्रतिदिन एक हजार चांदी के सिक्कों के बराबर आएगा। यह कीमत है एक लाख सैनिकों की सेना खड़ी करने की।

जब लड़ाई असली हो और जीत पाने में देरी हो रही हो, तो हथियार अपनी धार खो बैठते हैं और सैनिकों का जोश ठण्डा पड़ जाता है। यह किसी किले को घेर कर अपनी ऊर्जा नष्ट करने के समान है। लम्बे चलने वाले युद्ध में राज्य के सभी संसाधन उस युद्ध का बोझ उठाने की क्षमता खो देते हैं। याद रखें जब हथियारों की धार मंद पड़ जाए, सैनिक अपना जोश खोने लगें, खजाना खाली हो जाए, ऐसे में आस-पास के राज्य आपकी अवस्था का लाभ उठाने की ताक में रहेंगे। ऐसी स्थिति के परिणामस्वरूप उत्पन्न नतीजों से चतुर से चतुर व्यक्ति तक का बच निकलना असंभव है।

अतः युद्ध में मुखर्तापूर्ण जल्दबाजी तो सुनने में आई है परंतु लम्बे समय तक युद्ध करते रहने का कोई औचित्य नहीं है। तथा संपूर्ण मानवता के इतिहास में एक भी ऐसा उदाहरण नहीं मिलेगा कि लम्बे युद्ध के चलते किसी राष्ट्र को तनिक भी लाभ मिला हो।

युद्ध में गति के महत्त्व को सही समझ सकता है जो लम्बी लड़ाई

के दुष्परिणामों से परिचित हो।

कहने का अर्थ है - युद्ध को शीघ्रता से समाप्त करके तुरंत लाभ प्राप्त करें। जो लम्बे अंतराल वाले युद्ध के गलत परिणामों को जानता हो वही युद्ध को लाभदायक तरीके से लड़ना जानेगा।

युद्ध में प्रवीण सैनिक रसद की कभी दोबारा मांग नहीं करता और न ही उसके आपूर्ति वाहन को दो बार से अधिक भरा जाता है। एक बार युद्ध की घोषणा हो जाने के बाद वह अपना बहुमूल्य समय आपूर्ति की प्रतीक्षा में बरबाद नहीं करता, न ही वह सेना को ताजा राशन पाने के लिए पीछे मोड़ता है। वह तो बिना अपना समय गंवाए दुश्मन की सीमा में प्रवेश कर जाता है क्योंकि उसके लिए समय के सदुपयोग का मतलब, हमेशा अपने दुश्मन से एक कदम आगे होना है। अभेद रणनीतियाँ बनाने में निपुण जूलियस सीजर तथा नेपोलियन बोनापार्ट तक ने समय के सदुपयोग पर विशेष जोर दिया है।

अपनी युद्ध सामग्री साथ लेकर चलें, परंतु नज़र दुश्मन के साधनों पर जमाए रहें। ऐसा करने से सेना के पास पर्याप्त खाद्य सामग्री बनी रहेगी।

काफी दूर तक सेना का भरण पोषण करने से राज्य की अर्थव्यवस्था गड़बड़ा जाती है तथा इसकी वसूली जनता से करने पर लोगों में तंगहाली आ जाती है। दूसरे शब्दों में सेना का खर्च राज्य में महंगाई बढ़ने का कारण बनता है, तथा बढ़ी हुई कीमतों के चलते लोगों की जमा-पूंजी तो बरबाद होती ही है साथ ही उन्हें भारी भरकम कर (टैक्स) भी चुकाना पड़ता है। अंततः लोग अत्यधिक कठोर परिश्रम करने पर विवश हो जाते हैं। द्रव्य एवं ऊर्जा की इस हानि के कारण प्रजा को अत्यंत वेदना एवं पीड़ा का सामना करना पड़ता है।

ऐसे में टूटे रथ, थके व घायल घोड़ों, रक्षा कवच, नकाब, लोहे की टोपियों, तीर-कमान, भाले, ढाल एवं बैलगाड़ियों आदि का कुल खर्च राज्य के आधे खर्च के बराबर हो जाएगा।

नागरिक और सेना किसी भी राष्ट्र की अमूल्य धरोहर होते हैं। इनके महत्त्व को समझना तथा उन्हें सुरक्षा एवं भोजन की गारंटी देना सत्ता में बैठे लोगों का प्रथम कर्तव्य है।

बुद्धिमान सेनाध्यक्ष इस बात का विशेष ध्यान रखता है कि मौका मिलते ही दुश्मन के साधनों को उपयोग में लाया जाए क्योंकि खाद्य सामग्री से भरी दुश्मन की एक गाड़ी अपनी बीस गाड़ियों के बराबर होती है। यही नियम दुश्मन की अन्य चीजों पर समान रूप से लागू होता है।

दुश्मन को मारने के लिए हमें हमारे सैनिकों में आक्रोश को जाग्रत करना चाहिए। दुश्मन की पराजय में उन्हें अपनी विजय नज़र आनी चाहिए। दुश्मन को पराजित करने के लिए उन्हें आवश्यक रूप से पुरस्कृत किया जाना चाहिए। जब्त की गई दुश्मन की संपत्ति में से उन्हें ईनाम भी देना चाहिए, ताकि युद्ध में उनकी रुचि बनी रहे तथा हर सैनिक दुश्मन को हराने में अपना तन-मन लगा दे।

अतः जब शत्रु के दस या अधिक रथ जीत लिए जाएं तो उन सैनिकों को पुरस्कृत किया जाए जिन्होंने इन पर पहले कब्ज़ा किया हो। दुश्मन के रथों पर से उनके झण्डे उतारकर उन पर अपनी पताका अविलम्ब फहरा दें। साथ ही इन जीते गए रथों को अपने रथों के संग मिलाकर इनका उपयोग युद्ध में करना चाहिए तथा बंदी बनाए गए सैनिकों के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए। इसी को पराजित शत्रु का प्रयोग करके अपना बल एवं सामर्थ्य बढ़ाना कहा जाता है।

युद्ध को गंभीरता से लें। युद्ध में आपका मकसद विजय प्राप्ति होना चाहिए न कि लम्बी लड़ाई। एक सेनाध्यक्ष राष्ट्र के भाग्य का विधाता होता है। इसी व्यक्ति के निर्णय पर निर्भर करता है कि देश में शांति एवं सुरक्षा रहेगी अथवा देश पर खतरे के बादल मंडराएंगे।



3. छल पूर्वक आक्रमण

युद्ध करना और उसे जीतना कोई बड़ा काम नहीं है, बड़ा काम है बिना लड़े शत्रु के सारे अवरोध समाप्त कर देना। दुश्मन का सारा इलाका बिना तोड़-फोड़ सही सलामत अपने कब्जे में ले लेना व्यावहारिक युद्ध कला का सर्वोत्तम उदाहरण है। इसी क्रम में दुश्मन की पूरी सेना, पलटन, कम्पनी, बटालियन आदि को बर्बाद किए बिना पकड़ना उसे नष्ट करने से अधिक बेहतर है। इसके लिए जरूरी है दुश्मन की योजनाओं को समझना - कार्यान्वित होने से पहले ही उन्हें निष्फल कर देना, दुश्मन की सेना को एकत्र होने से बचाना - दुश्मन को उसके मित्रों से अलग-थलग रखना तथा युद्ध के मैदान में शत्रु पर धावा बोल देना।

किसी किले की घेराबंदी युद्ध में सबसे कठिन कार्य है। अतः जहां तक संभव हो किले को न घेरा जाए। इस काम के लिए कारतूसों से बचाने वाले चोगे, गतिमान शरणास्थल और हथियार आदि जुटाने में तीन महीने लग जाएंगे, तथा किले के बाहर मिट्टी और पत्थर जुटाकर टीले बनाने में तीन महीने और लग जाएंगे। इतनी लम्बी अवधि के बाद युद्ध के लिए आतुर जनरल जब अपने सैनिकों को आक्रमण करने का आदेश देगा तो उसकी एक तिहाई सेना मारी जाएगी और किला फिर भी फतह न होगा। किले की घेराबंदी के इतने अधिक विनाशकारी परिणाम होते हैं।

एक बुद्धिमान सेनानायक दुश्मन को बिना युद्ध किए पराजित करके अपने कब्जे में ले लेता है। वह उनके शहरों को बिना घेरे ही जीत लेता है। बिना लम्बी लड़ाई के वह उन्हें धराशायी कर देता है। अपनी सेना को एक-जुट रखते हुए, बिना कोई नुकसान पहुंचाए वह दुश्मन के राज्यों पर विजय प्राप्त करता है।

युद्ध का नियम : यदि हमारी सेना दुश्मन की सेना से दस गुना बड़ी है तो उसे घेरना, यदि पांच गुना बड़ी है तो हमला करना, यदि दो गुना बड़ी है तो अपनी सेना को दो हिस्सों में बांटना - एक भाग दुश्मन पर सामने से तथा दूसरा पीछे से आक्रमण करेगा। यदि दुश्मन सामने से जवाब देता है तो उसे पीछे से रौंद डालें, और यदि वह पीछे से किए गए हमले का जवाब देता है तो उसे सामने से नष्ट करें। कहने का अर्थ यह है कि सेना के एक हिस्से का नियमित रूप से प्रयोग करें तथा दूसरे हिस्से का आपात स्थिति में।

यदि दोनों सेनाएं एक दूसरे के टक्कर की हैं तो धावा बोलना चाहिए, यदि वे संख्या में कम हैं तो हम उन्हें नजरअंदाज कर सकते हैं, परंतु शत्रु के मुकाबले अगर हमारी तादाद बहुत कम है और हर मोर्चे पर हम उनसे कमजोर हैं तो युद्ध भूमि छोड़ देना हमारे लिए सर्वोत्तम विकल्प होगा। लड़ाई की शुरुआत छोटी टुकड़ी से करें तथा समापन बड़ी सेना के साथ।

सेनापति राष्ट्र की ढाल होता है, यदि ढाल मजबूत है तो राज्य (शासन) व्यवस्था भी मजबूत होगी, परंतु यदि कमजोर है तो राज्य भी असुरक्षित एवं कमजोर होगा। शासक अथवा शासन व्यवस्था तीन प्रकार से सेना को नष्ट कर सकती है -

आंख मूंद कर सेना को आगे बढ़ने या पीछे हटने का आदेश देकर। इसे कहते हैं सेना को पंगु बना देना।

किसी भी राज्य को बाहर से तथा सेना को अंदर से नियंत्रित नहीं किया जाना चाहिए। जब सेना दुश्मन के बहुत नजदीक हो तो सेनापति को सेना से थोड़ी दूरी पर होना चाहिए ताकि स्थिति, परिस्थिति एवं अवस्थाओं का मूल्यांकन सही प्रकार से करके सेना को उचित निर्देश दिए जा सकें।

सेना को उसी तरह चलाना जिस तरह से प्रशासन को चलाया जाता है। यह अनुचित है क्योंकि प्रशासन एवं सेना दोनों के हालात एवं तौर-तरीके अलग-अलग होते हैं। इससे सेना में अशांति पैदा हो जाएगी।

सैनिक कार्य क्षेत्र एवं प्रशासनिक कार्य क्षेत्र एक दूसरे से

पूर्णतः भिन्न हैं। मानवता एवं न्याय वे सिद्धांत हैं जिनसे राज्य का प्रशासन चलाया जाता है। परंतु ये सिद्धांत सेना में काम नहीं आते हैं, वहां मौकापरस्ती तथा लचीलापन जरूरी होता है।

शासक द्वारा अपनी सेना पर दुर्भाग्य थोपने का तीसरा तरीका है - सेना में अधिकारियों की योग्यता को नज़रअंदाज करके गलत स्थानों पर उनकी नियुक्तियाँ करना, जिसके चलते उनकी योग्यता का इस्तेमाल सही जगह नहीं हो पाता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि शासक सेना में परिस्थिति के अनुसार स्वयं को परिवर्तित कर लेने के सिद्धांत से परिचित नहीं होता, इससे जवानों का विश्वास तो टूटता ही है साथ ही उनका हौसला भी कमजोर पड़ जाता है।

सुमाचेन (100 ई. पू.) के अनुसार यदि कोई सेनापति परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को बदलने के सिद्धांत से अनभिज्ञ है तो उसे आधिकारिक पद नहीं सौंपा जाना चाहिए। काम लेने में निपुण व्यक्ति बुद्धिमान, साहसी, लालची तथा मूर्ख व्यक्ति से भी करवा लेता है। बुद्धिमान अपनी बुद्धिमत्ता दिखाता है और अपनी योग्यता सिद्ध करता है, बहादुर व्यक्ति अपनी बहादुरी दिखाता है, लालची व्यक्ति सदैव अवसर की तलाश में रहता है तथा मूर्ख व्यक्ति मौत से नहीं डरता।

जब सेना अशांत हो तथा उसमें विश्वास की कमी हो तो आस-पास के राजाओं की तरफ से मुसीबत का आना निश्चित है। इससे सेना में अराजकता फैलती है तथा विजयश्री आपके हाथों से फिसलकर दूर चली जाती है। अतः जीत के लिए निम्न पांच बातों का पता होना हमारे लिए अति आवश्यक है -

1. वह जीतेगा जो जानता है कि कब युद्ध करना है और कब नहीं।

यदि वह युद्ध करने में सक्षम है तो आगे बढ़कर वह आक्रमण करेगा, यदि नहीं तो प्रतिरक्षात्मक होकर पीछे हट जाएगा। जो यह जानता है वह अवश्य ही विजयी होगा।

2. वह जीतेगा जो जानता है कि अपनी शक्ति का उपयोग कहाँ और कैसे करना है।

युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिए सेनापति द्वारा सैनिकों की सही संख्या का अनुमान लगाने की योग्यता ही पर्याप्त नहीं है बल्कि युद्ध कला को जानकर एक छोटी सेना भी बड़ी सेना पर विजय प्राप्त कर सकती है। अपना ध्यान युद्ध में पैदा होने वाले अवसरों का लाभ उठाने पर जमाए रहें। यदि सेना शक्तिशाली है तो युद्ध भूमि में बने रहें अन्यथा युद्ध क्षेत्र में मुश्किलें खड़ी कर दें।

3. वह जीतेगा जिसकी सेना एक ही लक्ष्य से प्रेरित है।

4. वह जीतेगा जो पहले से तैयार होकर दुश्मन की सेना की प्रतिक्षा करता है।

5. वह जीतेगा जिसके पास पर्याप्त सैन्य क्षमता है और शासक उसके काम में दखल नहीं देता।

बड़े-बड़े आदेश देना सरकार का कार्य होता है परंतु सेना के लिए निर्णय लेने का अधिकार सेनापति के कार्य क्षेत्र में आता है। सेना के कामों में अनावश्यक दखलंदाजी से होने वाले दुष्परिणामों की व्याख्या करने की यहां आवश्यकता नहीं है। परंतु सभी जानते हैं कि नेपोलियन को मिली असाधारण सफलता का श्रेय इसी बात को जाता है कि उसकी फौज में किसी केंद्रीय सत्ता के द्वारा हस्तक्षेप नहीं किया गया था।

यदि आप अपने दुश्मन को जानते हैं और स्वयं से भी अच्छी तरह परिचित हैं तो आपको सौ बार आक्रमण करने से भी घबराने की आवश्यकता नहीं है। यदि आप स्वयं को तो जानते हैं लेकिन दुश्मन को नहीं तो हर विजय के बाद आपको एक पराजय का सामना करना पड़ेगा। परंतु यदि आप न तो स्वयं के और न ही दुश्मन के विषय में जानते हैं तो हर युद्ध में आपकी पराजय निश्चित है।

यदि आप अपने दुश्मन को जानते हैं तो आप आक्रामक

प्रणाली अपना सकते हैं, तथा स्वयं को जानने का लाभ यह है कि समय रहते आप प्रतिरक्षात्मक कदम उठा सकते हैं। आक्रमण प्रतिरक्षा का भेद है तथा प्रतिरक्षा आक्रमण से पूर्व की तैयारी।